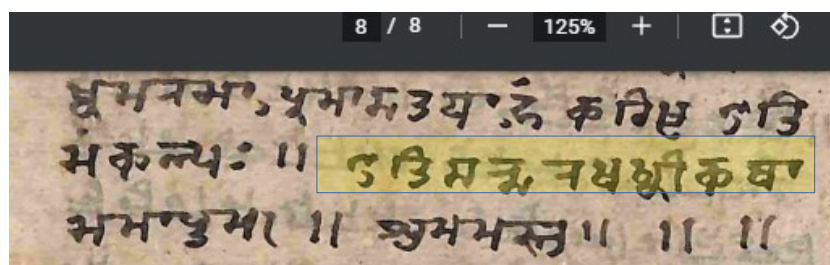
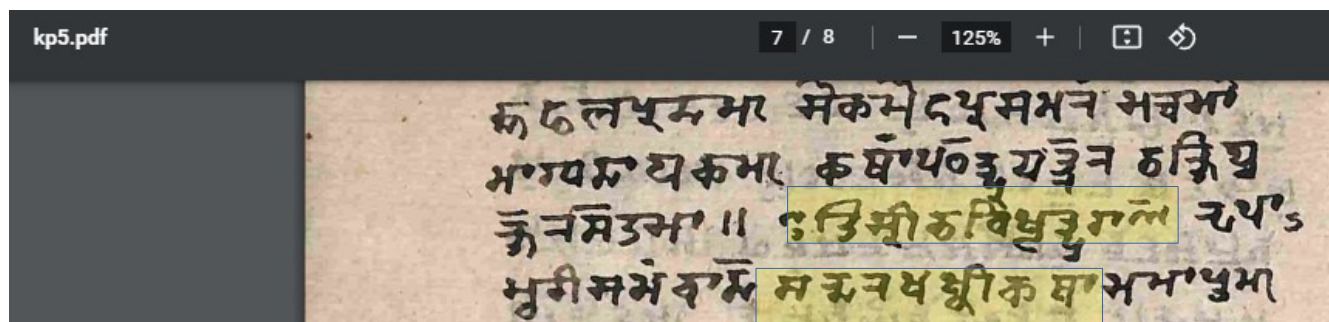


चन्दन षष्ठी कथा - श्री भविष्यपुराण



मन्त्रपुत्रं संयुक्तं यत्र नाना नैमदः॥
 हृद्यं संममममृते इदमन्त्रे वैमपागः
 दधिमुत्रैव नगरे वमते च विष्णु वा ॥
 एकं मन्त्रं मन्त्रिः कृयादः मन्त्रपागः
 उः मुधि मन्त्रमि किं उं कृयादे मन्त्रिः
 मित्रः पाकं वद विष्णु कंद इय प्रतातु
 मन्त्रं प्रे व मन्त्रियं नगी उम ह
 विम यानि कृति हं वद विष्णु पाकं
 महा ह्म न मि कभा उं मन्त्रि प्रवत्त ॥

3 मेवतापित्तमुखा निशामभुक्षंभाह
 उ निगमाविजतमुखा सुषका लीन
 भभुषा केनमिच्छदुर्गोमग्भा उनमेव
 लमा नागी सङ्गुलीये निभागत म
 उरुदा भुभोविधे निरकद्रमकारवे
 भुतः पसग देउमु ग दक द्रुलिउद्रुः
 सयसभुग देराता वृद्धलीधयसंयुता
 सातिभुमरुवतुमिन्नु सुक द्रुप्रकावतः
 राता सङ्गुलरुवने वववममिनेमिने

मधुवदुतमभुषा सागदुपतिवसभा
 मेवज्ञनविणनेउ गदामुहवमिउ
 दियाममिनेमेषेउ वैसुमे वंषऊवता ॥
 वलिमरुता मभुगवायमेहे विदुनदि ॥
 उमिक्कालीसमभुषे उवाभुभायमज्ञने
 ददका रुरुउमुन मुदभुमनिगीरुलभा
 भगलं वाभुमे वभु ठेएनेपरिवलिउभा
 धनः धनंरुउंउंन मनेरुउंममक्तिउः ॥

विराडुपधिउडा मनुकेदनिपातभा वाङ्मल
 मृमउपडा गडासुपमभन्निभा भाउनेधुमः
 जापिता रुद्रामुनमभमृमडा किमत्र भागडाः प्रती
 उवभा केमवेमनिमवमंमुं सु मउने नगधि
 धृतिममडा एडादुरापुंठे विप्रः पुममंऊनडा
 क्रिएः वितीयिम दिनप्रु मउनी पुनरा गाडा
 रुद्रामुवृङ्गाः मवे रु पुभाउडा कटकाभा
 उदितेकषयिद्वय मउनेः पुनरुऊनना उय
 मुभाक्रिएः मवे किंकीति मुते धृति उड्डका रुड

भागट विभया विधुमउमः गुरु विमृष्ट मे
 रसू उाफिताल मुमंमडाभा मडाभासिव
 ममृते सुपमेनमुकटका उभि रूरेमुपग
 उाष्टुपुं पुत्रेमुद्रः निपडा देप्रउमुपु मिठका
 आविठमुं मभसू मगाउदे रुद्रननी मरु
 रुपुं मभसिडा ॥ प्रउवय ॥ मम मउः क
 वे कपुं मभपुं येववउउ केन कभ विपकेन
 मद्रुली येनिभागा ॥ मडा ॥ उवमुगिमु
 उपडा परयाभउडा मृकटका उंभा विद्रि
 मडापपं मउवेविधमसिडाभा मडिताधि

भद्रिडाथवृवंसेन गतासंलताभरभा
 श्रीपद्मविद्यानदा नतंकद्रमयागद
 उतकद्रविपाकेन नरकेपतिङ्गुमभा
 म्नाममुमपुठवेन रुतिभ्रगुठवेमुत
 कादंययापुयषा भमुदेमुषभागरता
 विभमुयभयायेन येन देउभुभासर ॥
 इतिउभुवसः म्ना उतुतः मेकपीतिउः
 माभुविलोकिउतेन गेगीमंवरुमेकउ
 वृतेमरुनयभूपाष्ट रुद्रपायपुण्यमना
 भाउविभेमनायेव सकारविधिपूचकभा

नरुभिन्प्रमिउपके यमाधधूसिलहृते
 उभुभुयेधाम्मेव सकृमालेकपुष्टना
 रुद्रविणनंभधूस भानेकयामिषेमिउभा
 रकुसकनभाभु रुचयाएलमेकनभा
 गेमेभभुसमुलेन वैवकुंठकिउेवनी ॥
 मरुनेनभुकेन लिपिद्रुदुपुतिभुभा
 गंकेःपुष्टः उषापुष्टेकीपेष्टेवभनेगषः
 वैवकुंचिविष्टेष्टेव प्रएयेउभभाहिउः

८ कषा न के समी उहं स नंम ये समाजैः
 ना ना विठे मु नैवैः ब्रह्म च निष्ठे ये
 मन्त्रे स ये मम कृपय मष्ट मन्त्रैः सुकैः खलैः
 मधुष्ट मन्त्रि उ सं म् न न्त्रे स कृमि लोभ ॥
 कस मिम् ए उ स नं न गी र क वलैः
 की र्णे म म ग रू उ ह रि ने इ म म म् व ग द
 ए उ मि स मे व न म सु र ल नी य उ ॥ ५ उ उ
 म न्त्रः ॥ न न वि वि न ग ल उ वि प्र न
 उ म् उ मा उ म् उ म् म प हं दि सै क मे व य

धा उ मा उ न प टा प ठा व च ग ड म मे
 क म ह य मा ए वं स न न ध ध्वा ष्टे व उ म न प
 म न च म गे म द म् प म न न य उ ल ले
 प प य न नः उ उ ल ले म म व प्रै डि व उ म
 उ उ रि ष्टि म व ड् उ उ प प श्री ए न व डि
 उ उ म् ए उ म् मु म् म द उ य न गी व उ म उ
 उ म म गे ड म म् लै क व मे वि उ य व म् म् म्
 मि क क रै म उ म ह म ये उं दि व उ म् म्

७

भमंत्रहि विमेषे लुप्यंभं स भवभोक्त
 गमायकभा प्रयेस्त्रुभदेस वक्ति
 युक्तेनसेतभा उत्रुतकुतभाष्टुं श्रीं
 मेधनिकारकभा सनणहृष्टं सैर ठेगभे
 रुदलप्रसभा मेकमेदधुसभनं भवभो
 भाग्यप्रयकभा कषेपठेयुयत्रुन ठक्ति
 कुनसेतभा ॥ इति श्रीठविधुगुल्ले रुपः
 भुमीसभं वरं स रुनध श्रीक वामभापुभा

प्रथमः ॥ गौरीभक्तियोगे सत्सुभमे
 नमः कायाभुताय निवाकगयनमः
 गौरीभक्तियोगे मिवायनमः गायत्रीभ
 क्तियोगे बुद्धलनमः नारायणनमः
 चमूगीमायनमः इन्द्राणीभक्तियोगे
 मेवरायनमः प्रदलमायनमः
 गल्लमायनमः ॥ उतः स्त्रुभदेरु ॥
 आदिसंकल्पः ॥ भयाकदास्मिन्
 भाकृतेन मरीचेलयडिंमिस प्रष्टक

३ म'रुच'रुपुल'म'मुया'लितं उमुया'यक
मे'सय'मु' विना'मा'य स'रु'नय'धी'व'उं ह
ध'म'न'मा' ध'मा'म'उ'य'रुं क'रि'ह उ'ति
म'क'ल्यः ॥ उ'ति'स'रु'नय'धी'क'व'
म'मा'पु'मा ॥ अ'म'म'रु ॥ ॥ ॥